हिंदी दिवस विशेषांक

राजभाषा रश्मि

अप्रैल - सितंबर, 2024



भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
वस्त्र मंत्रालय

THE COTTON CORPORATION OF INDIA LIMITED

A Mini Ratna Company
(GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING)
MINISTRY OF TEXTILES

राजभाषा रश्मि

संरक्षक



श्री ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक मंडल



श्री विजय कुराडगी
निदेशक (विपणन)



श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता
निदेशक (वित्त)



श्री एस. के. पाणिग्रही
मुख्य महा प्रबंधक (विपणन)



श्री तिलक राज तनेजा
मुख्य महा प्रबंधक (वित्त)



संतोष कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

राजभाषा रश्मि

अप्रैल - सितंबर 2024

अनुक्रमणिका

1. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से 01
2. निदेशक (वित्त) का संबोधन 02
3. संपादकीय 03
4. संदेश (माननीय गृह मंत्री) 04
5. संदेश (माननीय वस्त्र मंत्री) 06
6. संदेश (माननीय वस्त्र राज्य मंत्री) 07
7. संदेश (सचिव) 08
8. संयुक्त जयंती 09
9. हिंदी दिवस कार्यक्रम 10
10. नराकास पुरस्कार की झलकियां 20
11. राजभाषायी निरीक्षण 22
12. बालक की निश्छलता 25
13. व्यक्तित्व की पहचान है भाषा 27
14. देश की व्यवस्था में राजभाषा हिंदी व अन्य भारतीय भाषाएँ 29
15. पर्यावरण 34
16. मेरे बेटे 36
17. कपास का पौधा 37
18. हिंदी 38
19. सदियों से है सुशोभित जो 39
20. माँ 40
21. गलती का एहसास 41
22. क्योंकि 42
23. भारत में जल संकट एवं जल संकट के समाधान 43
24. सेवानिवृत्ति 44

रचना के तथ्यों का दायित्व स्वयं रचनाकार का है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से ....



राजभाषा रश्मि के इस अंक में आप सबका स्वागत है। किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में उस देश की भाषा का अहम योगदान होता है। भाषा या बोली सिर्फ विचारों की वाहिका ही नहीं अपितु राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन भी होती है। भाषा किसी भी देश की मौलिक सोच, राजकीय कामकाज और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ अपनी भाषा में ही की जा सकती है।

भारतीय कपास निगम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से प्राप्त होने वाले निदेशों के अनुसरण में मुख्यालय और हमारे सभी शाखा कार्यालयों में हिंदी के कार्यान्वयन के लिए पूर्णरूप से अनुपालन किया जा रहा है।

आप सभी जानते हैं कि निगम एक वाणिज्यिक संस्थान है। व्यवसाय में ग्राहकों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना अति आवश्यक होता है। महात्मा गाँधीजी ने कहा था - हमारे लिए ग्राहक सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है, वह कार्य में बाधक नहीं बल्कि हमारे कार्य का लक्ष्य है। किसी भी प्रतिष्ठान की सफलता में ग्राहकों के साथ दीर्घकालीन संबंध, आपसी सहयोग सदभावना तथा आपसी जान-पहचान व मित्रता की भावना ही इसका आधार है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ग्राहकों को बेहतर सेवा देना एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है।

हिंदी भाषा को तकनीकी सुदृढता प्रदान करते हुए कंप्यूटर पर कार्य करने की क्षमता को बढ़ावा देना चाहिए ताकि कोई भी कर्मचारी आसानी से टंकण आदि कार्य खुद कर सके, उसे किसी पर आश्रित न होना पड़े। इस प्रकार न केवल स्वतः काम करने की इच्छाशक्ति उत्पन्न होगी, और दूसरों को प्रोत्साहन भी मिलेगा।

गृह पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य निगम की अपनी विभिन्न गतिविधियों को आप तक पहुँचाने के साथ साथ राजभाषा हिंदी में आप सबको रचना लेखन के माध्यम से आपकी अभिव्यक्ति को उजागर करने के लिए प्रेरित करना है। राजभाषा के प्रचार प्रसार में पत्रिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए हमें दैनिक कार्यालयीन कार्य में राजभाषा का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए ताकि हम अपने विचारों को अधिकतम लोगों तक पहुंचा सकें।

शुभकामनाओं सहित...

ललित गुप्ता

ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (वित्त) का संबोधन



राजभाषा रश्मि का हिंदी दिवस विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह मेरा सौभाग्य है कि राजभाषा रश्मि के माध्यम से मैं सतत आपसे संपर्क में रहता हूँ। राजभाषा रश्मि का मुख्य उद्देश्य निगम के अधिकारियों/कर्मचारियों को निगम के कार्यकलापों से अवगत करना है तथा लेखन के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान करना है।

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं इसीलिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की गई जिसे देश के सर्वाधिक व्यक्ति बोल तथा समझ सकते हों। हिंदी ने भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। हिंदी आकाश में चमकते हुए सूर्य के समान शाश्वत है, ओजस्वी है, प्रखर हैं। हिंदी एक संगीतमय भाषा है तभी तो भारत की संत परंपरा के कबीर, रहीम, मीरा, सूरदास सभी ने अपने अनमोल वचनों व विचारधारा को हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। जिससे आज तक भारतीय जनमानस स्वयं को धन्य मानता है।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय था कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी। भारतीय कपास निगम भारतीय संविधान के इसी महत्त्वपूर्ण निर्णय का अनुपालन करने के लिए कटिबद्ध है। पिछले कई वर्षों से निगम मुख्यालय और सभी शाखा कार्यालयों में सितंबर माह में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा मनाता रहा है। इस वर्ष भी हमने राजभाषा विभाग के आदेशों का अनुपालन करते हुए इस अवधि में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। मुझे खुशी है कि हमारे अधिकांश अधिकारियों/कर्मचारियों ने इनमें बढ़-चढ़कर भाग लेकर इसे सफल बनाया। हमारा लगातार यह प्रयास रहता है कि हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन सर्वोत्कृष्ट ढंग से किया जाए। आइये, इस अवसर पर राजभाषा की प्रगति की दिशा में नए मील-स्तम्भ स्थापित करने का संकल्प लें।

शुभकामनाओं सहित...

राजेन्द्र कुमार गुप्ता
निदेशक (वित्त)

संपादकीय



राजभाषा रश्मि का हिंदी दिवस विशेषांक आपको सौंपते हुए हमें हर्ष हो रहा है। हिंदी एक समृद्धिशाली भाषा है, इसमें "वसुधैव कुटुम्बकम" की पवित्र भावना निहित है, क्योंकि भाषा का सीधा संबंध देश की संस्कृति से होता है इसीलिए हिंदी को भारतीय संस्कृति का मूल आधार माना जाता है जो अपने आंचल में समस्त भारतीय संस्कृतियों को समाहित किये हुए है।

यह अंक हिदी दिवस के पावन अवसर को समेटे हुए है। रश्मि के इस अंक में आपको हिंदी दिवस समारोह की सचित्र झलकियाँ मिलेंगी। निगम के मुख्यालय के साथ-साथ शाखा कार्यालयों में इस वर्ष भी प्रतिवर्षानुसार हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा मनाया गया जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ -चढ़ कर भाग लिया जो हिंदी के प्रति उनके प्रेम का परिचायक है। हमें अपनी भाषा में काम करने के लिए किसी प्रेरणा की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए अपितु यह स्वतः स्फूर्ति होनी चाहिए। अन्य भाषाओं से शब्दों का ग्रहण करना किसी भाषा के जीवित होने का प्रमाण है। हमें चाहिए कि हम राजभाषा के प्रति अपने दायित्व को समझें और अपना कार्य अधिकाधिक हिंदी में करें।

"राजभाषा रश्मि" आपकी अपनी पत्रिका है। हमें आपके नवीनतम लेख, कहानियों तथा कविताओं का इंतजार रहेगा। कृपया पत्रिका के बारे में आप अपने प्रेरणादायी सुझाव हमें अवश्य दें ताकि राजभाषा रश्मि को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाया जा सके।

संतोष

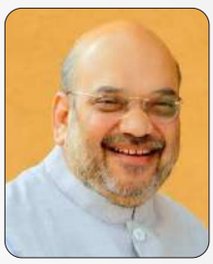
संतोष कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

शुभकामनाओं सहित

ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियों!
आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे राजभाषा हीरक जयंती के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आदोंलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासों ग्रंथों, सिध्द-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योत्तिरीश्वर वाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है. जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए है।. राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्त्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस

विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वां खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही. राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश हिंदी शब्द सिंधु का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत व विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजमाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2024

वंदे मातरम

(अमित शाह)

गिरिराज सिंह
GIRIRAJ SINGH

सत्यमेव जयते

वस्त्र मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF TEXTILES
GOVERNMENT OF INDIA



संदेश

भाषा, सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का अभिन्न रूप होने के साथ-साथ विचारों को अभिव्यक्त करने का भी बहुत सहज माध्यम है। सदियों से भारत विविध भाषाओं और बोलियों वाला विशाल देश रहा है और हिंदी के समृद्ध भाषा होने से यह सर्वमान्य है कि हिंदी स्पष्ट रूप से पूरे देश में संपर्क भाषा की भूमिका निभा सकती है। भारत की संविधान सभा ने हिंदी के इसी महत्व को समझते हुए, 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। इसी उपलक्ष्य में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

आज के आधुनिक युग में नई-नई तकनीकों का प्रयोग बढ़ रहा है। इन तकनीकों ने हिंदी भाषा में काम करना सरल बना दिया है जो हमारे देश के आर्थिक विकास में भी योगदान दे रहा है चाहे वह 'आत्मनिर्भर' भारत की संकल्पना हो या "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की परिकल्पना। गत कई वर्षों से भारत सरकार का हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर निरंतर जोर रहा है। वस्त्र मंत्रालय अपने कार्यों और दायित्व के निर्वहन के माध्यम से सीधे आम लोगों से जुड़ा है, इसलिए वस्त्र मंत्रालय में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है जो हमारे शासकीय कामकाज में परिलक्षित होता है।

हिंदी दिवस के अवसर पर वस्त्र मंत्रालय और इसके सभी कार्यालयों के समस्त वरिष्ठ अधिकारी और कार्मिक यह निश्चय करें कि हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करते हुए अपने शासकीय कामकाज में सरल और सुबोध हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे और अपने राष्ट्र का गौरव बढ़ाएंगे।

(गिरिराज सिंह)

पबित्र मार्घेरिटा
Pabitra Margherita

सत्यमेव जयते

विदेश एवं वस्त्र राज्य मंत्री
भारत सरकार

Minister of State for External Affairs and Textiles
Government of India

संदेश

भारत समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं वाला एक विशाल देश है। सदियों से यहाँ अनेकों भाषाएं और बोलियां व्यवहार में रही हैं जो देश की सामाजिक परम्पराओं की संवाहिका रही हैं। इसकी सामाजिक और सांस्कृतिक विविधताएं इसे अद्भुत और असाधारण देशों की श्रेणी में सर्वोत्तम बनाती हैं। ये विविधताएं जनजीवन के रहन-सहन में ही नहीं अपितु भाषाओं के स्तर पर भी देखी जा सकती हैं।

हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसलिए, हम प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाते आ रहे हैं। उस ऐतिहासिक निर्णय को ध्यान में रखते हुए राजभाषा हिंदी के विकास और समृद्धि के लिए पूरी ईमानदारी और निष्ठा से सरकारी कामकाज करना हम सब की नैतिक एवं संवैधानिक जिम्मेदारी है।

इसके लिए सरकार द्वारा तमाम पुरस्कारों, प्रोत्साहनों एवं प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था की गई है। सरकारी कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों को इन व्यवस्थाओं का लाभ उठा कर सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना चाहिए। निस्संदेह एक विदेशी भाषा की बजाय अपनी भाषा में काम करके हमें गर्व की अनुभूति होगी तथा इससे राष्ट्रीयता की भावना भी पुष्ट होती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि मंत्रालय तथा इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन कार्यालयों में कार्यरत सभी अधिकारी और कर्मचारी मेरी इस अपील का सम्मान करते हुए अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करेंगे और अपने मातहतों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी शुभकामनाएं।

(पबित्र मार्घेरिटा)

रचना शाह, भा.प्र.से.
सचिव
Rachna Shah, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
वस्त्र मंत्रालय
उद्योग भवन, नई दिल्ली-110011
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF TEXTILES
UDYOG BHAWAN, NEW DELHI-110011



संदेश

हिंदी न केवल भारत के संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा है बल्कि भारत देश के रीति-रिवाजों, विचारों और यहां की सभ्यता संस्कृति की जीवंत परम्पराओं की भी परिचायक है। हिंदी अत्यंत सरल, समृद्ध और सशक्त भाषा है जो अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करते हुए पूरे राष्ट्र को एक कड़ी में जोड़ने का कार्य कर रही है।

भारत के विकास और प्रगति में हिंदी भाषा का अत्यधिक योगदान रहा है। शासन प्रशासन और जनता के मध्य सूचनाओं के प्रेषण और संवाद में तारतम्यता का सूत्र है- हिंदी। वस्त्र मंत्रालय के कार्यों का स्वरूप ऐसा है कि इसकी विभिन्न योजनाएं सीधे आमजन से जुड़ी है। अतः मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं का लाभ जन-जन तक और अधिक पहुंचाने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि इन योजनाओं के कार्यान्वयन में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हो जिससे कारीगरों और बुनकरों को इन योजनाओं की जानकारी मिल सके और वे इसका प्रचुर लाभ उठा सके।

हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर, मैं वस्त्र मंत्रालय तथा इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों/बोडो/निगमों के अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करती हूं कि वे अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2024 के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में सहभागिता करें तथा संवैधानिक कर्तव्य का पालन करते हुए अपना सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करें।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

14 सितंबर, 2024

रचना शाह

(रचना शाह)

मुख्यालय में छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिराव फुले और भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की संयुक्त जयंती समारोह

दिनांक 26 अप्रैल 2024 को निगम के मुख्यालय में श्री विजय कुराडगि, निदेशक (विपणन) तथा श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता, निदेशक (वित्त) की उपस्थिति में भाकनि कर्मचारी संघ तथा भाकनि अनु. जाति/अनु जनजाति/ओबीसी कर्मचारी कल्याण संघ द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिराव फुले और भारतरत्न डॉ. बाबासाहब भीमराव आंबेडकर की संयुक्त जयंती समारोह मनाया गया । जिसमें निगम के मुख्यालय के सभी अधिकारी तथा कर्मचारी गण द्वारा तीनों महानुभावों को पुष्प अर्पण किया गया ।



निदेशक (विपणन) पुष्पमाला चढ़ाकर अपनी श्रध्दांजलि अर्पित करते हुए



(समारोह में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारी गण एवं कर्मचारी गण)

हिंदी दिवस कार्यक्रम 2024

मुख्यालय

निगम के मुख्यालय में दिनांक 14.09.2024 से दिनांक 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । पखवाड़े के दौरान निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग व प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिता जैसे निबंध प्रतियोगिता, काव्य पाठ प्रतियोगिता, आशुभाषण, अनुवाद एवं तकनीकी प्रशासनिक शब्दावली, प्रश्न मंच और अंताक्षरी आदि कुल 6 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्यालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । दिनांक 22.10 .2024 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया । इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री, वस्त्र मंत्री, वस्त्र राज्य मंत्री एवं सचिव के प्रेरणादायी संदेशों का पठन निगम के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किया गया । कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्रदान करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक साथ में निदेशक (विपणन), निदेशक (वित्त) एवं मुख्य सर्तकता अधिकारी)



(निदेशक (वित्त) द्वारा पुरस्कार प्रदान करते हुए)

शाखा कार्यालयः सिरसा

शाखा कार्यालय सिरसा में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह' का आयोजन श्री ब्रिजेश कसाना, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती कर्मजीत कौर, सहायक प्रोफेसर हिंदी विभागाध्यक्ष, राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(शाखा प्रबंधक श्री ब्रिजेश कसाना मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए)



(मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते हुए कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालयः श्रीगंगानगर

शाखा कार्यालय श्रीगंगानगर में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री मोहित शर्मा, महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर शाखा कार्यालय श्रीगंगानगर के अधिकारी एवं कर्मचारी गण)



(महा प्रबंधक द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते हुए)

शाखा कार्यालयः भीलवाड़ा

शाखा कार्यालय भीलवाड़ा में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री पी. के. महरा, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री पुरूषोतम नरायण शर्मा, सेवानिवृत्त उप निदेशक को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(शाखा प्रबंधक श्री पी. के. महरा मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए)



(शाखा प्रबंधक श्री पी. के. महरा अधिकारी व कर्मचारी को संबोधित करते हुए)

शाखा कार्यालयः नई दिल्ली

शाखा कार्यालय नई दिल्ली में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री गोकुल विग्नेश, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते शाखा के कार्मिक)


(हिंदी पखवाड़ा समापन के दौरान शाखा प्रबंधक के साथ सभी विजेता प्रतिभागियों का समूह फोटो)

शाखा कार्यालयः इंदौर

शाखा कार्यालय इंदौर में दिनांक 14.09.2024 से 20.09.2024 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 20.09.2024 को हिंदी सप्ताह समापन समारोह का आयोजन श्री अभिजीत शर्मा, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि हिंदी साहित्य क्षेत्र के जाने माने व्यक्तित्व श्री हरेराम बाजपेई को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए शाखा प्रबंधक श्री अभिजीत शर्मा)


(मुख्य अतिथि विजेता कर्मचारी को पुरस्कार देते हुए)

शाखा कार्यालयः अकोला

शाखा कार्यालय अकोला में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री नीरज कुमार, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. निशाली सत्यनारायण पंचगाम को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए शाखा प्रबंधक श्री नीरज कुमार)



(हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालयः औरंगाबाद

शाखा कार्यालय औरंगाबाद में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताऐं आयोजित की गई। दिनांक 28.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री स्वपनील वि. दडमल, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विशाला शर्मा, प्रोफेसर, हिंदी विभाग औरंगाबाद को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(समापन कार्यक्रम में उपस्थित विजेता अधिकारियों एवं कर्मचारियों का समूह फोटो)



(हिंदी दिवस के अवसर पर मंच पर मुख्य अतिथि के साथ श्री स्वपनील वि. दडमल, शाखा प्रबंधक)

शाखा कार्यालयः अहमदाबाद

शाखा कार्यालय अहमदाबाद में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री नीरज कुमार भट्ट, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. आलोक कुमार गुप्त को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए साथ में श्री नीरज कुमार भट्ट, शाखा प्रबंधक)



(हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर उपस्थित शाखा कार्यालय अहमदाबाद के अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालयः राजकोट

शाखा कार्यालय राजकोट में दिनांक 14.09.2024 से 27.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 27.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री शुभम शुक्ला, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री विशेष कुमार त्रिपाठी, हिंदी अनुवाद अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखा परीक्षा राजकोट को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए शाखा प्रबंधक श्री शुभम शुक्ला)



(हिंदी पखवाड़ा में उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए शाखा कार्यालय राजकोट के अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालयः भटिंडा

शाखा कार्यालय भटिंडा में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री विनोद कुमार, महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री रूपेन्द्र शर्मा, हिंदी अधिकारी पंजाब केंद्रीय विद्यालय, भटिंडा को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मुख्य अतिथि विजेता कर्मचारी को पुरस्कार देते हुए)



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए
श्री विनोद कुमार, महा प्रबंधक एवं अधिकारी)

शाखा कार्यालयः हुबली

शाखा कार्यालय हुबली में दिनांक 14.09.2024 से 27.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 27.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्रीमती शिखा झांब, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रवीण राजाराम बनसोडे, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय हुबली को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मुख्य अतिथि श्रीमती शिखा झांब उप महा प्रबंधक)



(हिंदी सहायक द्वारा राजभाषा संबंधी जानकारी देते हुऐ)

शाखा कार्यालयः गुंटूर

शाखा कार्यालय गुंटूर में दिनांक 14.09.2024 से 20.09.2024 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 20.09.2024 को हिंदी सप्ताह समापन समारोह का आयोजन श्री पी. अमरनाथ रेड्डी, महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री श्यामसुंदर साहू, उप महा प्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया



(हिंदी पखवाड़ा में उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए शाखा कार्यालय गुंटूर के अधिकारी एवं कर्मचारी गण)



(शाखा प्रबंधक श्री पी. अमरनाथ रेड्डी अतिथि महोदय का स्वागत करते हुए)

शाखा कार्यालयः अदिलाबाद

शाखा कार्यालय अदिलाबाद में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री आद्या मिश्रा, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री राकेश भोयर, वरिष्ठ प्रबंधक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, अदिलाबाद को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(शाखा प्रबंधक श्री श्री आद्या मिश्रा अतिथि महोदय का स्वागत करते हुए)



(मुख्य अतिथि से पुरस्कार प्राप्त करते हुए कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालयः वारंगल

शाखा कार्यालय वारंगल में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री अर्जुन दवे, महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती वी. ममता, हिंदी विभागाध्यक्ष को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी पखवाड़ा समापन के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी गण)



(श्री अर्जुन दवे, महा प्रबंधक अतिथि का स्वागत करते हुए)

शाखा कार्यालयः महबूबनगर

शाखा कार्यालय महबूबनगर में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री के. महेश्वर रेड्डी, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री सतीश मल्लिकार्जुन, प्राध्यापक को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर भाग लेते शाखा कार्यालय महबूबनगर के अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालयः कोयम्बतूर

शाखा कार्यालय कोयम्बतूर में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री आर. जयकुमार, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री डॉ. रमेश बाबु दर्शि, वरिष्ठ प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, कोयम्बतूर को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मुख्य अतिथि एवं शाखा प्रबंधक से पुरस्कार प्राप्त करते हुए कर्मचारी)

शाखा कार्यालयः रायगढ़ा

शाखा कार्यालय रायगढ़ा में दिनांक 14.09.2024 से 28.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 28.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री टी. के. दास, शाखा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. भगवान बिस्वाल, हिंदी प्राध्यापक, रायगढ़ा को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(शाखा प्रबंधक तथा मुख्य अतिथि शाखा के कार्मिको को पुरस्कार प्रदान करते हुए)



(हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए)

शाखा कार्यालयः कोलकाता

शाखा कार्यालय कोलकाता में दिनांक 14.09.2024 से 20.09.2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 20.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन श्री संजय द्विवेदी, सहायक महा प्रबंधक की अध्यक्षता में की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन, कोलकाता को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुऐ श्री संजय द्विवेदी, शाखा प्रबंधक)

नराकास पुरस्कार की झलकियां

अकोला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिये दिनांक 16.07.2024 को शाखा कार्यालय अकोला को केंद्र सरकार एवं सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालय वर्ग के श्रेणी में तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।



(नराकास तृतीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए शाखा प्रबंधक श्री नीरज कुमार)

औरंगाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिये दिनांक 13.08.2024 को शाखा कार्यालय औरंगाबाद को उपक्रम कार्यालय वर्ग के श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।



(प्रथम पुरस्कार स्वरूप नराकास शील्ड के साथ शाखा प्रबंधक श्री स्वपनील दडमल)

राजभाषा रश्मि

सिरसा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु उत्कृष्ट



(नराकास प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए शाखा प्रबंधक श्री ब्रिजेश कसाना और प्रमाण पत्र ग्रहण करती हुई श्रीमती सोमा बजाज हिंदी सहायक)

अहमदाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सराहनीय योगदान के लिए दिनांक 26.06.2024 को शाखा कार्यालय अहमदाबाद को प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।



(नराकास प्रथम पुरस्कार हेतु शील्ड एवं प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए शाखा प्रबंधक)



(नराकास प्रथम पुरस्कार हेतु शील्ड एवं प्रमाण पत्र ग्रहण करती हुई श्रीमती चैताली ओझा हिंदी सहायक)

(सभी पुरस्कृत शाखा कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई)

राजभाषा निरीक्षण

शाखा कार्यालय : वारंगल

शाखा कार्यालय वारंगल में मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा दिनांक 04.07.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया। शाखा वारंगल राजभाषा को प्रोत्साहन देने हेतु बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है ।



(मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदया शाखा कार्यालय वारंगल में राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करती हुई साथ में महा प्रबंधक श्री अर्जुन दवे)

शाखा कार्यालय : आदिलाबाद

शाखा कार्यालय अदिलाबाद में मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा दिनांक 05.07.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । राजभाषा को प्रोत्साहन देने हेतु शाखा आदिलाबाद द्वारा किए गए कार्य सराहनीय है ।



(मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदया शाखा कार्यालय आदिलाबाद में राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करती हुई साथ में शाखा प्रबंधक श्री आद्या मिश्रा एवं हिंदी सहायक)

शाखा कार्यालय : सिरसा

शाखा कार्यालय सिरसा में निदेशक (विपणन) द्वारा दिनांक 22.07.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया। हिंदी कार्य शाखा में सराहनीय है ।



निदेशक (विपणन) शाखा कार्यालय सिरसा में राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करते हुए साथ में शाखा प्रबंधक श्री ब्रिजेश कसाना एवं हिंदी सहायक

शाखा कार्यालय : आदिलाबाद

शाखा कार्यालय आदिलाबाद में निदेशक (विपणन) द्वारा दिनांक 24.09.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । इस निरीक्षण के दौरान राजभाषा हिंदी का काम सराहनीय है और भी अच्छा कर सकते है ।



निदेशक (विपणन) शाखा कार्यालय आदिलाबाद में राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करते हुए साथ में शाखा प्रबंधक श्री आद्या मिश्रा एवं हिंदी सहायक तथा शाखा के अन्य अधिकारी गण

शाखा कार्यालय : भीलवाड़ा

शाखा कार्यालय भीलवाड़ा में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक और निदेशक (विपणन) द्वारा दिनांक 14.05.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । इस निरीक्षण के दौरान शाखा का हिंदी कार्य काफी सराहनीय पाया गया है।



अध्यक्ष एवं प्रबंध निरीक्षक शाखा कार्यालय भिंलवडा में राजभाषा हिंदी
साथ में शाखा प्रबंधक पिके महरा

शाखा कार्यालय : कोलकाता

शाखा कार्यालय कोलकाता में निदेशक (विपणन) द्वारा दिनांक 02.08.2024 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । इस निरीक्षण के दौरान शाखा का हिंदी कार्य सराहनीय है ।



मैं दुनियां की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, ये मैं सह नहीं सकता ।
- आचार्य विनोबा भावे

बालक की निश्छलता

मुंबई की लोकल ट्रेन एक अनोखी जगह होती है, जिसमें हमारी रोजमर्रा की क्रियाओं का समीचीन समावेश होता है और जहाँ कई प्रकार की विविध प्रक्रियाएँ जैसे सब्जी, फलों को सुधारने से लेकर सिलाई-बुनाई तक, बच्चों के भविष्य पर चर्चा, तो कभी राजनैतिक, आर्थिक मुद्दों पर विचार-विमर्श, आदि समानान्तर रूप से चलती रहती हैं। इसके परिणामस्वरूप, मुंबई की लोकल ट्रेन में सफर करने वाला यात्री कभी अपने आप को अकेला महसूस नहीं कर सकता।

एक ऐसी ही अद्भुत शाम थी, जब मैं मुंबई के कांदिवली स्टेशन से विलेपार्ले तक जाने वाली लोकल ट्रेन पर सवार हुई। सौभाग्यवश महिला-डिब्बे में इतनी भीड़ होने के बावजूद, मुझे खिड़की वाली सीट भी मिल गयी। आमतौर पर, मैं अपने साथ ऐसे मौकों पर व्यस्त रहने के लिए, एक किताब हमेशा रखती थी, पर उस दिन मेरा पढ़ने का मन नहीं कर रहा था। मैंने अपनी दृष्टि, चारों तरफ दौड़ायी तो पाया कि जहाँ एक जगह पर, कॉलेज की लड़कियों की एक टोली गपशप कर रही थी, वहीं दूसरे कोने में एक महिला फोन पर, किसी को जोर से धमका रही थी। एक ओर एक घरेलू समान बेचने वाली स्त्री अपनी चीजों की बढ़ा-चढ़ाकर व्याख्यान कर रही थी तो दूसरी तरफ एक महिला, सब बैठे हुए यात्रियों से, उनके गंतव्य-स्टेशन के बारे में पूछताछ कर अपनी सीट का आरक्षण करना चाह रही थी। तभी अगला स्टेशन आया और एक तेज बिजली के करंट की भाँति, काफी यात्री नीचे उतर गए। चूंकि हर स्टेशन में, यात्रियों का लेन-देन होता है, उतरने वालों से कई अधिक संख्या में चढ़ने वालो का झुंड, ट्रेन में दाखिल हुआ । उनमें से, एक युवती अपने दो बच्चों के साथ, ट्रेन में चढ़ी और मेरे सामने वाली सीट पर बैठ गयी। मेरे अनुमान से, उसके बड़े लड़के की उम्र 8-9 साल की होगी और छोटे-वाले लड़के की लगभग 4 साल। छोटा भाई बहुत ही आकर्षक था, जिसकी बड़ी-बड़ी आँखों में शौतानी साफ-साफ झलक रही थी। बड़े भाई का खिड़की वाली सीट पर बैठना, छोटे भाई को खटक रहा था और वो अपनी माता से उस सीट पर जाने की माँग करने लगा, जो उसके बड़े-भाई को अस्वीकार्य थी। जब सीधी उँगली से बात नहीं बनी, छोटे भाई ने टेढ़े हथकंडे अपनाए और उसने अपने बड़े भाई को मारना-पीटना शुरू कर दिया। बस फिर क्या था ? बड़े भाई ने भी रौद्र रूप धारण कर लिया और ट्रेन में कोहराम मचा दिया। अंततः उनकी माता ने विवश होकर बड़े भाई के आगे शांति की गुहार लगायी और खिड़की की सीट के बदले में, उसकी मनचाही वस्तु देने का भी प्रलोभन दिया क्योंकि वो जानती थी कि छोटे महाराज तो समझौता नहीं करने वाले थे। तब बड़े भाई ने अपने हथियार डाल दिए और छोटे भाई को अपनी सीट सुपुर्द कर दी। उस क्षण पूरे डिब्बे में खुशी की लहर दौड़ गयी क्योंकि छोटे सरकार का कोलाहल शांत हो चुका था और सीट मिलने की उपलब्धि से उसकी भोली-भाली, बोलती हुई चंचल आँखों की चमक देखते बनती थी। अपने बड़े भाई द्वारा दिया गया बलिदान भी उसके लिए पर्याप्त नहीं था, क्योंकि अभी भी, वो बीच-बीच में अपने भाई की प्रतिक्रिया जानने, उसको कनखियों से देख लेता था। लेकिन तब तक बड़े भइया ने सही मायने में अपनी परिस्थिति से सुलह कर ली थी, और वो भी अपने छोटे भाई के साथ खिलखिलाकर हँस पड़ा, जिससे उनकी माता को भी अत्यंत संतोष हुआ। उस पल मुझे यह एहसास हुआ कि बच्चों को भगवान का रूप मानना

अतिशयोक्ति नहीं है क्योकि उनको बिना कृत्रिम खेल और मनोरंजन के साधनों के भी, हर समय प्रसन्न रहना आता है, सिर्फ अपना ही नहीं अपने परिसर में दूसरे लोगों का भी मन बहलाना आता है और वो बड़ो की अपेक्षा, वस्तुओं की निस्सारता को जल्दी समझ जाते हैं, इसलिए वो तुरंत अपनी पुरानी रंजिशों को मिटा पाते हैं। इतने में, मेरा गंतव्य-स्थल आ गया और उस दिन, एक बार फिर, मैं लोकल-ट्रेन से एक नया पाठ पढ़कर, अपने स्टेशन पर उतरी।

श्रीमती निधी जैन
आईए एवं एएस
मुख्य सतर्कता अधिकारी
मुख्यालय





राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।
- महात्मा गांधी

व्यक्तित्व की पहचान है भाषा

अभिरुचि, अनुभव, आदत, शारीरिक व बौद्धिक क्षमता, संस्कार सहित दृष्टिकोण, नैतिक मूल्य, विचार, व्यवहार आदि व्यक्ति के आंतरिक गुण कहलाते हैं। रंग-रूप, कद- काठी, चाल-ढाल, वेश-भूषा, चेहरा-मोहरा आदि व्यक्ति के बाह्य गुणों के अंतर्गत आते हैं। व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य गुणों के समन्वित रूप को व्यक्तित्व कहते हैं। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति के जन्मजात गुण, स्वभाव व व्यवहार समग्रतः व्यक्तित्व कहलाता है। एक ओर जहाँ व्यक्तित्व मनुष्य की संपूर्ण चारित्रिक विशेषताओं, भावनाओं, विचारों व अनुभूतियों का आइना होता है। वहीं दूसरी ओर अनुभव, आस-पास के माहौल, परिवार, समाज, शिक्षा, सोच- समझ आदि के माध्यम से व्यक्तित्व सजता-सँवरता-निखरता हुआ सतत परिवर्तित व परिवर्धित भी होता रहता है।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान उसके कार्य, भाषा, सोच, विचार, स्वभाव आदि कई माध्यमों से की जा सकती है, लेकिन भाषा इनमें सबसे सशक्त व उत्तम माध्यम है। किसी व्यक्ति की भाषा से उसके व्यक्तित्व का पता बड़ी ही सहजता, सरलता व सुगमता से लगाया जा सकता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य समाज में रहते हुए विविध सामाजिक गतिविधियों में भाग लेता है, जिसके लिए वह भाषा का प्रयोग करता है। आपसी संपर्क में रहने, बातचीत करने और मेलजोल बढ़ाने में भाषा मनुष्य एवं समाज के बीच सेतु को काम करती है। भाषा के माध्यम से वह अन्य सामाजिक व्यक्तियों की इच्छाओं, भावनाओं, विचारों, संवेदनाओं को जानता है। उनकी व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, भौगोलिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक विरासत आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त करता है। इसके अलावा, भाषा के माध्यम से ही वह अपने मन के भावों व अनुभूतियों को भी अभिव्यक्ति प्रदान करता है। स्वयं को पहचानने का एक अच्छा साधन होने के कारण वह उसे सुधारता, निखारता, सँवारता और एक नई दिशा प्रदान करता है। अतः मनुष्य के जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रभावशाली व आधारभूत कड़ी भाषा के माध्यम से उसके व्यक्तित्व को बड़ी-ही आसानी से जाना, समझा व परखा जा सकता है।

भाषा आचरण व व्यवहार का मूल आधार होती है। सभ्य व शालीन भाषा से व्यक्तित्व की उत्कृष्टता, उत्तमता व गरिमापूर्णता का बोध होता है। मृदुता, विनम्रता, सौम्यता, शालीनता के गुणों से ओतप्रोत व्यक्ति सुशील, शिष्ट व शालीन कहलाता है और शीघ्र ही लोकप्रिय हो जाता है। वह समाज में सम्मानजनक व गरिमापूर्ण स्थान पाता है और तेजी से सफलता हासिल करता है। वहीं दूसरी ओर, कठोरता से पेश आने वाला, कठोर व कड़वी बातें करने वाला, वाणी में कर्कशता व रुखापन रखने वाला व्यक्ति समाज में अपमानित होता है और उसकी छवि दागदार होती है। यही नहीं, भाषा में व्यर्थ का दुहराव, घुमाव- फिराव, अनावश्यक विस्तार करने एवं असामाजिक हरकतों सहित गलत हाव-भाव व इशारे करने वाला व्यक्ति. पसंद नहीं किया जाता। वहीं दूसरी ओर, मितभाषी और सटीक भाषी की बात हर व्यक्ति उत्सुकता से सुनता, समझता व अपना अभिमत भी प्रकट करता है। वस्तुतः भाषा का शिष्ट एवं शालीन प्रयोग कार्य-संस्कृति और व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। यही कारण है कि अपने व्यक्तित्व के निखार के लिए भाषा का इस्तेमाल करने से पहले, व्यक्ति और समाज दोनों ही स्तरों पर, सही रूप में आगा-पीछा सोचना, उसके परिणामों को जानना, तोल-मोल के बोलना जरूरी होता है।

भाषा में हर एक शब्द की भी अपनी अर्थवत्ता व महत्ता होती है। शब्द हमारी संस्कृति के वाहक होते हैं, हमारी

चेतना का बोध कराते हैं और हमारे भावनात्मक संबंधों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं। भाषा में शब्दों की अतुलनीय शक्ति को स्वीकारा नहीं जा सकता। एक ओर जहाँ अच्छे, मधुर, प्रभावी व सकारात्मक शब्दों का प्रयोग बात को सही दिशा प्रदान करता है और व्यक्तित्व को प्रेरक व प्रभावी बनाता है। वहीं दूसरी ओर, गलत या अनुचित शब्दों, अपशब्दों का इस्तेमाल व्यक्ति की छवि को बिगाड़ता है, चरित्र व व्यक्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाता है और व्यक्तित्व को सीधे-सीधे नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। व्यक्तित्व में निखार के लिए शब्दों को सही तौर पर जानना, देख-परखकर इस्तेमाल करना जरूरी होता है। भाषा में बढ़िया शब्दों के इस्तेमाल के लिए शब्दों का धनी होना बहुत जरूरी होता है। अच्छी किताबें पढ़कर, अच्छे परिवेश का चयन कर, अपने परिवार, नाते-रिश्तेदारों, दोस्तों से चर्चा कर अपने शब्द-भंडार को आसानी से बढ़ाया जा सकता है। और, शब्दों के इस असीम भंडार से चयनित शब्दों का प्रयोग कर अपने व्यक्तित्व को निखारा व सँवारा जा सकता है।

हमारे व्यक्तित्व की पहचान के लिए हमारी भाषा में शब्दों का चयन जितना महत्वपूर्ण होता है, उतना ही उन्हें कहने का ढंग और उच्चारण का तरीका भी बहुत मायने रखता है। किसी व्यक्ति के दबे-छिपे नैतिक, मानसिक, शारीरिक व सामाजिक गुणों को उसके व्यवहार, क्रियाकलाप और विभिन्न अवसरों पर अन्य व्यक्तियों के साथ उसकी बातचीत सहित बातचीत के ढंग से सहज ही पहचाना जा सकता है। जैसे- वह सामाजिक जीवन में भिन्न- भिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार व्यवहार या प्रतिक्रिया करता है ? चुनौतियों का सामना दृढ़ता से करता है या जल्दी ही अपनी हार मान लेता है ? जीवन में किन बातों को प्राथमिकता देता है ? अपने से बड़ों, छोटों, बुजुर्गों व स्त्रियों के साथ कैसा बर्ताव करता है ? अपनी जिम्मेदारियों को स्वयं निभाता है या फिर बड़ी चालाकी से बेझिझक उसे किसी अन्य व्यक्ति पर ढकेल देता है ? चूंकि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अंतः क्रियाएं, भावनात्मक प्रतिक्रियाएं, प्राथमिकताएं, वरीयताएं भिन्न-भिन्न तरह से अभिव्यक्त होती हैं, इसलिए बोलने के ढंग के माध्यम से हर व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान सहज ही हो जाती है। यही कारण है कि किसी विद्वान द्वारा सही बात गलत ढंग से कहने या बातों में कर्कशता या रुखापन होने से सही बात भी गलत प्रतीत होती है, जबकि एक सामान्य व्यक्ति की महज सुंदर ढंग से कही गई बात हमें प्रभावित करती है, हमारे मन-मस्तिष्क पर अंकित हो जाती है और हमें जिंदगी भर याद रहती है।

सामाजिक जीवन में भाषा का स्थान सर्वोपरि है। हमारे व्यक्तित्व की पहचान होने के साथ-साथ भाषा हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अपने व्यक्तित्व के निखार के लिए अपनी भाषा को सभी दृष्टि से उत्कृष्टता की कसौटी पर खरा उतरना जरूरी होता है।

डॉ. मीना राजपूत
पूर्व - वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

पटरी अंग्रेजी की तो कैसे दौड़े भारतीय भाषाओं की गाड़ी ?
(देश की व्यवस्था में राजभाषा हिंदी व अन्य भारतीय भाषाएँ)

इसके पहले कि हम देश की व्यवस्था में हिंदी अथवा भारतीय भाषाओं को बढ़ाने की बात करें, हमें पहले वस्तुस्थिति को समझना होगा कि स्वतंत्रता से अब तक हिंदी कहां से कहां पहुंच गई हैं और हम किस ओर बढ़ रहे हैं। हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है या घट रहा है इसको लेकर कथित आशावादियों और यथार्थवादियों के बीच प्रायः वाद विवाद होता ही रहता है। यदि हम हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत लोगों की बात करें तो भी यहां कई वर्ग दिखाई देते हैं। जहां एक वर्ग जो हिंदी के नाम पर सुविधा और लाभ में डूबा है उसे तो यही लगता है कि चारों तरफ हिंदी ही हिंदी है और हिंदी हर क्षेत्र में तेजी से बढ़ रही है। इसलिए उन्हें कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। एक वह वर्ग भी है जो अंग्रेजी को आज की प्रमुख आवश्यकता मानता है और हिंदी के अंग्रेजीकरण पर इस हद तक आमादा है कि वह हिंदी के चलते-फिरते हर शब्द को अंग्रेजी से बदलने के लिए पूरी शक्ति झोंके हुए हैं। इस वर्ग में हिंदी का मीडिया, सिनेमा जगत और विज्ञापन जगत प्रमुख हैं। इस क्षेत्र में जिस प्रकार अंग्रेजीदां वर्ग का दबदबा बढ़ा है उससे स्थिति निरंतर बिगड़ती जा रही है। अपने को आधुनिक, अतिशिक्षित और प्रगतिशील दिखाने की फिराक में लगे मीडियाकर्मी हिंदी से ज्यादा अपने अंग्रेजी ज्ञान को बघारते दिखते हैं। एक ऐसा भी बड़ा वर्ग है जो यह तो जानता और मानता है कि हिंदी की बुनियाद हर क्षेत्र से खिसक रही है लेकिन वह पूरी तरह असहाय होने की मुद्रा बनाकर कुछ भी करने को तैयार नहीं है। इस वर्ग का मानना है कि जब कुछ होना ही नहीं है तो क्यों कुछ किया जाए। हिंदी के विद्वानों और साहित्यकारों द्वारा हिंदी को साहित्य और मनोरंजन तक सीमित करने के चलते देश के ज्यादातर लोगों की यह धारणा बन चुकी है कि हिंदी भाषा के प्रचार का मतलब केवल कहानी, कविता और मनोरंजन। इसीके चलते देश के ज्यादातर लोग ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा और रोजगार आदि में हिंदी के प्रयोग या हिंदी माध्यम की बात को केवल एक बचकाना शगूफा समझने लगे हैं। ज्यादातर केंद्रीय कार्यालयों, संस्थानों आदि में हिंदी पखवाड़े का अभिप्राय भी कहानी – कविता, नृत्य- नाटक गीत -संगीत आदि तक और कार्मिकों की रुचि पुरस्कार आदि तक सिमट कर रह गई है। तमाम सरकारी आदेशों के बावजूद हिंदी पखवाड़े के माध्यम से व्यवस्था में हिंदी को बढ़ाने की बात धीरे - धीरे गौण होती जा रही है।

लेकिन स्वतंत्रता से लेकर अब तक देश में हिंदी का प्रसार हुआ है या संकुचन ? यदि कुछ बिंदुओं को लेकर ही आकलन करें तो कुछ ही समय में स्थिति स्पष्ट होने लगती है। स्वतंत्रता के समय ही नहीं स्वतंत्रता के दो तीन दशक बाद तक भी देश में हिंदी भाषी क्षेत्रों में ज्यादातर लोग हिंदी में ही पढ़ाई करते थे और अन्य राज्यों में वहां की स्थानीय भाषाओं में। राजभाषा आयोग की उन्नीस सौ छप्पन की रिपोर्ट को ही देखें तो पूरे देश में अंग्रेजी जानने वालों का प्रतिशत सर्वाधिक तमिलनाडु में था जो कि कुल आबादी का लगभग 1% था । इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि पूरे देश में 1951 तक अंग्रेजी जानने वालों का प्रतिशत कितना कम रहा होगा।
अच्छी अंग्रेजी जानने वालों या अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले तो कुछ अत्यधिक संपन्न वर्ग के लोग ही थे जिनका सत्ता में खासा दखल था। यह जान कर आश्चर्य होगा कि वह तमिलनाडु, जहाँ कहा जाता है कि हिंदी का विरोध है वहाँ उस समय हिंदी ऐच्छिक विषय होने पर भी 1952-53 में 78.6% तथा 1953-54 में 82% लोग स्वेच्छा से हिंदी

पढ़ते थे। लेकिन आज महानगरों की लगभग पूरी आबादी अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने लगी है। यह रुझान बहुत ही तेजी से छोटे नगरों, कस्बो से होते होते गांवों तक पहुंच चुका है।

इसका मुख्य कारण यह रहा कि उच्च शिक्षा व रोजगार में अंग्रेजी माध्यम न केवल बना रहा बल्कि बढ़ता गया। राजभाषा आयोग की रिपोर्ट 1956 की रिपोर्ट से इसका खुलासा होता है जिसके अनुसार केंद्रीय लोक सेवा आयोग द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा से लेकर तमाम उच्च पदों की ही नहीं चतुर्थ वर्ग (सहायक कर्मचारी संवर्ग) तथा केंद्रीय हिंदी सचिवालय लिपिक सेवा तक की सभी परीक्षाएं अंग्रेजी माध्यम से ली जाती थीं और इनमें से 9 के लिए अंग्रेजी विषय भी अनिवार्य किया गया था । ऐसे में कोई कैसे अपने बच्चों को हिंदी या मातृभाषा माध्यम से पढ़वाने की सोचता ।

इसका प्रभाव आगे चल कर अब इस रूप में सामने आया है । छोटे छोटे कस्बों और गावों तक में जाने - अनजाने अंग्रेजी के नाम पर खुलने वाले अधकचरे स्कूल हमारे देश के नौनिहालों को अंग्रेजी रटवा कर राष्ट्रीय के बजाए सीधे सीधे अंतर्राष्ट्रीय बनाने में लगे हुए हैं। हर कोई समझने के बजाए रटने की दौड़ में लगा है। सरकारी स्कूल जहां भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ाई होती भी है, उनकी हालत इतनी खस्ता है कि वहां पढ़ाई का कोई माहौल ही नहीं दिखता । दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि उसमें उस वर्ग के बच्चे जाते हैं जहाँ प्रायः पढ़ने का कोई विशेष माहौल या रुझान होता नहीं है। धीरे-धीरे ये स्कूल देश के विकास में अपनी भूमिका खत्म करते जा रहे हैं। जबकि ऐसे ही स्कूलों से एक समय देश के बड़े - बड़े विद्वान और वैज्ञानिक निकलते थे।

यदि देखा जाए तो 15 अगस्त 1947 को भारत स्वाधीन हुआ, जनतंत्र की भी स्थापना हुई लेकिन शासन-प्रशासन, वित्तीय व्यवस्था, न्याय व्यवस्था व शिक्षा व्यवस्था आदि में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। जब व्यवस्था नहीं बदली तो व्यवस्था की भाषा भी कैसे बदलती। पीछे देखो, आगे लिखो की नीति पर चलते पूरी व्यवस्था में अंग्रेजी अपने पांव पसारती गई। निजी क्षेत्र हो या सरकारी क्षेत्र लगभग सभी जगह यही मानसिकता काम करती रही है। सरकारी प्रयासों के बावजूद भी व्यवस्था में राज्यों की भाषाओं व हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी अपना वर्चस्व बनाए हुए है। अब भारत में यह एक निर्विवाद सत्य बन गया है कि भारत में बिना अंग्रेजी के तो आप कुछ नहीं कर पाएंगे, कुछ नहीं कर सकते और कहीं नहीं पहुंच सकते। इसका कारण स्पष्ट है कि देश की व्यवस्था में देश की भाषाओं को वह स्थान नहीं मिल सका, जिसकी अपेक्षा संविधान निर्माताओं ने की थी।

ऐसा भी नहीं कि संघ व हिंदी भाषी राज्यों में शासन- प्रशासन और देश की व्यवस्था में हिंदी तथा भारतीय भाषाएँ लाने के प्रावधान और प्रयास नहीं हुए लेकिन यदि आजादी के सत्तर साल बाद भी व्यवस्था की पटरी अंग्रेजी की हो तो देश के लोग कब तक हिंदी की पटरी बिछने की प्रतीक्षा करते हुए अपने बच्चों का भविष्य दांव पर लगाएँ व दूसरी ओर लोग अंग्रेजी की पटरी से सबसे आगे निकल जाएँ। हिंदी के प्रसार के सभी प्रश्नों के उत्तर उच्च शिक्षा – रोजगार और व्यवस्था की भाषा में निहित हैं । इनके बिना किए गए प्रयास औपचारिकता पूरी करने तक तो ठीक हैं, लेकिन कभी सफल नहीं हो सकते, कुछ सफल होंगे भी तो टिकेंगे नहीं । वैश्विक हिंदी सम्मेलन-2014 में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए इस संबंध में गोवा की पूर्व राज्यपाल स्व.श्रीमती मृदुला सिन्हा का यह कथन सबसे सटीक प्रतीत होता है – 'हिंदी को हृदय के साथ-साथ पेट की भाषा बनाना भी आवश्यक है।' अर्थतंत्र

से कट कर हिंदी या किसी भी भाषा का प्रयोग व प्रसार बढ़ाने के प्रयास सार्थक नहीं हो सकते । इसलिए सबसे आवश्यक है व्यवस्था की पटरी हिंदी व राज्यों की भाषाओं में समानान्तर रूप से इस प्रकार से बिछाई जाए कि शिक्षातंत्र के डिब्बों की सवारी करते हुए देश के युवा रोजगार के हर लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। यदि रोजगार की व्यवस्था न हुई तो हिंदी या किसी भी भाषा में की गई व्यवस्था के तैयार डिब्बे भी खाली ही रहेंगे, उनमें कोई बैठेगा नहीं। यदि रोजगार मिले तो तमाम व्यवस्थाएँ अपने आप निर्मित हो जाएँगी। माँग–पूर्ति के सिद्धांत के चलते और अर्थतंत्र की व्यवस्था से निजी क्षेत्र सभी व्यवस्थाएँ स्वयं कर लेगा।

उच्च शिक्षा और रोजगार के साथ-साथ देश की व्यवस्था में यदि उन छिद्रों की बात की जाए जिनसे तमाम प्रयासों का जल बह जाता है और हासिल कुछ नहीं होता तो उनमें कुछ महत्वपूर्ण बिंदू निम्नलिखित हैं :-

विधि और न्याय व्यवस्था : भारत की व्यवस्था में नीचे से ऊपर तक विधि निर्माण से लेकर न्याय व कानूनी प्रक्रियाओं के पालन में अंग्रेजी के माध्यम से कहीं कोई रुकावट नहीं जबकि हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं के लिए हर कदम पर समस्याएं हैं । कहीं पटरी ही नहीं है अगर है भी तो टूटी-फूटी। उच्च न्यायालय स्तर पर तो भारतीय भाषाओं के प्रयोग की अनुमति कहीं-कहीं ही है। और उच्चतम न्यायालय में तो है ही नहीं। इस स्थिति के चलते विधि शिक्षा से लेकर सब कुछ ज्यादातर अंग्रेजी में ही चलता है। इसीलिए विधि विशेषज्ञ और वकील आदि भी अंग्रेजी में ही कार्य करते हैं । हर कार्य, कहीं न कहीं विधि व्यवस्था से संबंधित होता है। फिर अंग्रेजी की पूर्व परंपरा और सुविधा की पटरी के चलते चाहे – अनचाहे हिंदी तथा भारतीय प्रेमी कार्मिक भी उसे अंग्रेजी में करने को विवश होते हैं। इसी के परिणामस्वरूप निजी और सरकारी क्षेत्र में अंग्रेजी का बोलबाला है। ऐसे कितने वकील है जो अंग्रेजी ठीक से न जानते हुए भी अपनी वकालत की गाड़ी जैसे – तैसे अंग्रेजी में खींचते हैं और आम आदमी तो आँख बंद करते बिना सोचे – समझे हस्ताक्षर करने को अभिशप्त है। हालांकि अब न्यायपालिका में भारतीय भाषाओं के रास्ते खुलने के संकेत मिलने लगे हैं

सूचना की भाषा नियत करना : - भारत सरकार के और राज्यों के कानूनों में बड़ी संख्या में ऐसे प्रावधान हैं जिनमें एक से दूसरे को सूचना देना कानूनन अनिवार्य है –जैसे –कंपनी अधिनियम में कंपनी की ओर से शेयरधारक को , ग्राहक कानूनों में उत्पाद या सेवा प्रदाता द्वारा ग्राहक को , बीमा कंपनी द्वारा बीमाधारक को जानकारी दी जानी आवश्यक है । यह उनका कानूनी अधिकार है। लेकिन ये सूचनाएं प्रायः अंग्रेजी में दी जाती हैं । इससे कानून के पालन की औपचारिकता तो पूरी होती है लेकिन अंग्रेजी न जानने वाले या ठीक से न समझनेवाले देश के 95% या उससे ज्यादा लोग विधि द्वारा उन्हें प्राप्त अधिकारों से वंचित रहते हैं क्योंकि भारत में प्रायः कोई ऐसा प्रावधान नहीं कि जनता को सूचना जनभाषा में यानी देश की और राज्य की भाषा में दी जाए। यदि हमारे देश में भी विभिन्न कानूनों के अंतर्गत दी जाने वाली जानकारी व सूचनाएँ संघ व राज्य का भाषाओँ में दी जाएँ तो जनता को उसके कानूनी अधिकार तो मिलेंगे ही, हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग व प्रसार में तीव्र गति से प्रगति होगी।

संपर्क भाषा व राजभाषा के कानूनी प्रावधान : - संविधान के अनुसार हिंदी संघ की राष्ट्रभाषा नहीं, राजभाषा है यानी सरकारी कार्य की भाषा है। इसके तमाम प्रावधान संघ के कार्यालयों तक सीमित हैं। वही स्थिति राज्यों की राजभाषा के साथ है। इनका कितना पालन होता है, यह अलग विषय है। लेकिन इसके चलते संघ के

राजभाषा संबंधी प्रावधानों का प्रभाव निजी क्षेत्र पर नहीं है। इसका परिणाम यह कि संघ के कार्यालयों को छोड़कर अन्य किसी पर हिंदी या किसी भारतीय भाषा का प्रयोग आवश्यक नहीं । सरकारी बैंक है तो उसे हिंदी का प्रयोग करना है, गैरसरकारी है तो कोई आवश्यकता नहीं। सभी क्षेत्रों में यही स्थिति है । अगर ये प्रावधान जनतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप जनहित को ध्यान में रख कर जनभाषा के प्रयोग की दृष्टि से बनाए गए होते तो इनका प्रभाव निजी क्षेत्र पर क्यों नहीं होना चाहिए। इसलिए यह आवश्यक है कि हिंदी को संघ की राजभाषा के सीमित दायरे से निकाल कर राष्ट्रभाषा का दर्जा देते हुए हिंदी के प्रयोग को निजी क्षेत्र पर भी लागू किया जाना चाहिए। यही व्यवस्था राज्यों की राजभाषा के संबंध में भी होनी चाहिए।

भाषा- प्रौद्योगिकी : - आज जबकि कंप्यूटर, मोबाइल आदि तमाम उपकरणों पर हिंदी में कार्य करने के सरकार मान्य इन्स्क्रिप्ट की बोर्ड से लेकर, फोनेटिक – इंटेलीजेंट की बोर्ड से ले कर गूगल वॉयस तक सब उपलब्ध है लेकिन देश के विद्यालयों और महाविद्यालयों में इसे बताने-सिखाने की कोई व्यवस्था नहीं है। इस संबंध में कई विशेषज्ञ समितियों की राय के बावजूद ऐसा नहीं हो रहा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि बच्चों सहित देश की ज्यादातर जनता हिंदी सहित तमाम भारतीय भाषाओं को देवनागरी लिपि के बजाए रोमन लिपि में ही लिखते है। हालांकि सरकार मान्य इन्स्क्रिप्ट कुंजी पटल जो अंग्रेजी कुंजीपटल पर कार्य करने वाला व्यक्ति मात्र 18-19 घंटे में गति के साथ देवनागरी अथवा किसी भारतीय भाषा की लिपि में टाइप कर सकता है। यह संक्षिप्त सा प्रशिक्षण सभी विद्यालयों में तत्काल प्रारंभ किया जाना चाहिए ताकि समग्र कार्य अपनी भाषा में किया जा सके। इसी प्रकार भाषा-शिक्षण में भाषा-प्रौद्योगिकी का तथा प्रौद्योगिकी – शिक्षण व विकास में भारतीय भाषाओं का समावेश किया जाना चाहिए।

भारतीय भाषाओं में (सूचना-प्रौद्योगिकी) आई. टी. संबंधी सुविधाओं के लिए एक ऐसी संस्था गठित की जाए जो स्वतः संज्ञान लेकर प्रत्येक नई प्रणाली/उपकरण आदि पर हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में सुविधाओं के लिए अविलंब कार्रवाई प्रारंभ कर दे। जिन प्रणालियों पर भारतीय भाषाओं में कार्य की सुविधा नहीं है उनके लिए अविलंब उक्त सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए संबंधित कंपनियों से संपर्क कर अथवा प्रौद्योगिकी विकास के लिए अतिशीघ्र कदम उठाएं । उदाहरणार्थ, माइक्रोसॉफ्ट पब्लिशर में
भारतीय भाषाओं में यूनिकोड समर्थन न होने से भारतीय भाषाओं में यूनीकोड फोंट में कार्य करने वालों को काफी कठिनाई होती है। इसके माध्यम से जनता को ऐसी सुविधा भी मिले कि कंप्यूटर, मोबाइल, या अन्य किसी भी प्रणाली पर भारतीय भाषा में सूचना मोबाइल अथवा ई-मेल से तत्काल प्राप्त हो सके और जनता अपनी कठिनाइयाँ सीधे इनके माध्यम से पहुंचा सके। ऐसी सुविधा का जनसंचार माध्यमों से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।

सरकारी कंपनियों, बैंको, कार्यालयों आदि सहित कॉर्पोरेट जगत का ज्यादातर कार्य ई.आर.पी. सॉफ्टवेयर, कोर बैंकिग आदि आई.टी समाधानों की मदद से तैयार करवाई गई कंप्यूटर प्रणालियों से होता है । निजी क्षेत्र की बात तो दूर सार्वजनिक क्षेत्र में भी ये प्रायः केवल अंग्रेजी में हैं। कुछ बैंकों आदि में कुछ हिंदी की व्यवस्थाएँ हैं भी तो वे प्रायः औपचारिकताएं पूरी करती दिखती हैं। वेबसाइट आदि की व्यवस्थाएं भी ऐसी ही हैं। जब तक इन्हें (अलग-अलग के बजाए) नियमानुसार एक साथ द्विभाषी/त्रिभाषी नहीं करवाया जाएगा हिंदी

का प्रयोग संभव प्रतीत नहीं होता। बैंकों, कंपनियों, ई-प्रशासन प्रणालियों, राजस्व संबंधी सॉफ्यवेयर प्रणालियाँ, ई बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, जनता सुविधा व प्रयोग से संबंधित पासपोर्ट बनाने जैसी प्रणालियाँ, ऑन लाइन सुविधाएँ, कोर बैंकिंग, कोर बीमा व विभिन्न कंपनियों के ऐसे सभी आई.टी. समाधानों में प्रारंभ से ही इस प्रकार की व्यवस्था और उनके प्रशिक्षण/रख-रखाव(मैंटेनैंस) आदि की समुचित व्यवस्था प्रारंभ से ही सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।

ई- गवर्नेंसः - इसी प्रकार स्थानीय प्रशासन से ले कर राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न व्यवस्थाएँ ई – प्रशासन(ई- गवर्नेंस) से जुड़ रही हैं जिनसे न केवल पारदर्शिता बढ़ती है बल्कि व्यवस्था भी अपेक्षाकृत चुस्त-दुरुस्त होती है। लेकिन समस्या यह है कि ऑनलाइन सेवाएँ और ई गवर्नेंस प्रायः अंग्रेजी में होने के चलते इंग्लिश गवर्नेंस बनता जा रहा है। अगर ये व्यवस्थाएँ जनता के लिए हैं तो जनभाषा में यानी संघ और राज्यों की भाषा में होनी चाहिए। इन प्रणालियों में हिंदी में सूचनाओं और निर्बाध कार्य करने की व्यवस्था से ही ये जन उपयोगी होंगी और अर्थतंत्र में भी जनभागीदारी बढ़ेगी। निश्चय ही व्यवस्था में हिंदी आने से हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ेगा।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि अर्थतंत्र में भारतीय भाषाओं में कार्य के लिए आवश्यक है कि भारत के तंत्र में भारतीय भाषाओं के अनुकूल व्यवस्था की पटरी बिछाई जाए, संसाधनों की ढलान भारतीय भाषाओं की ओर की जाए और उसके अनुकूल वातावरण तैयार किया जाए। ऐसा होने पर भारत के तंत्र में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की गाड़ी तेजी से दौड़ सकेगी ।

डॉ. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य'
पूर्व उपनिदेशक, राजभाषा विभाग,
निदेशक
वैश्विक हिंदी सम्मेलन

पर्यावरण

वो सारी चीजें जो हमारे चारों ओर हैं पर्यावरण कहलाता है जैसे हवा, पानी, आकाश, जमीन, जीव जन्तु, वनस्पति, पेड़ पौधे आदि। पर्यावरण, प्रकृति द्वारा भेंट किया गया एक उपहार है। हम सबको स्वस्थ रूप से जीने के लिए जिन चीजों की जरुरत पड़ती है वो पर्यावरण से ही प्राप्त होता है। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना होता है 'परि और आवरण' जिसमे परि का अर्थ होता है हमारे आस-पास या चारों तरफ वहीं आवरण का अर्थ होता है जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण का निर्माण जलवायु, स्वच्छता, प्रदूषण तथा पेड़-पौधे सभी जैविक तथा अजैविक को मिलाकर होता है। पर्यावरण हमारे दैनिक जीवन से सीधा संबंध रखता है और उसे प्रभावित करता है। मनुष्य और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक है। पर्यावरण जैसे जलवायु प्रदूषण या वृक्षों का कम होना मानव शरीर और स्वास्थ्य पर सीधा असर डालता है। मानव की अच्छी बुरी आदतें जैसे वृक्षों को सहेजना, जलवायु प्रदूषण रोकना पर्यावरण को प्रभावित करती है। वैसे ही मनुष्य की बुरी आदतें जैसे जल दूषित करना, बर्बाद करना, वृक्षों को काटना आदि भी पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित करती है । जिसका नतीजा बाद में मनुष्य को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करके भुगतना पड़ता है ।

पर्यावरण और प्रकृति - पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े-मकौड़े, सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधो के अलावा उनसे जुड़ी सार जैव क्रियाएं और प्रक्रियाएं भी शामिल है । जबकि पर्यावरण के अजैविक संघटको में निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएं आती है जैसे जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं से मिलकर बनी इकाई है।

यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर होती है और संपादित होती है। मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

विश्व पर्यावरण दिवस- संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित यह दिवस पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर जागरूकता लाने के लिए मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1972 में 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन से हुई। 5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया ।

पर्यावरण दूषित होने के कारण- विकास की अंधाधुंध होड़ में उद्योगों का तेजी से विकास हुआ, जिससे वायुमंडल में प्रदूषक गैसों का उत्सर्जन हुआ और वायु प्रदूषित हो गयी। बड़े बड़े उद्योगों के अपशिष्ट जल के नदियों में गिरने से जल प्रदूषित होकर एक गंभीर समस्या बन गया है। वनों के अंधाधुंध कटाई से न केवल वन्य जीवों का घर नष्ट हुआ है, बल्कि इससे मृदा अपरदन, जलवायु परिवर्तन और जल संकट भी उत्पन्न हुए हैं।

पर्यावरण दूषित होने से नुकसान- जलवायु परिवर्तन आज के समय में एक वैश्विक संकट बन चुका है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, जिससे ग्लेसियर्स पिघल रहे हैं और समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। इस जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कृषि, वनस्पति, और मानव जीवन पर भी सीधा पड़ रहा है। कई वन्य जीव प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं और कई विलुप्त होने के कगार पर हैं। साथ ही साथ मौसम चक्र में भी अनियमितता देखने को मिल रही है।

पर्यावरण को दूषित होने से कैसे बचाएं- हम सभी को बिना देर किये अपने पर्यावरण को संरक्षित करना

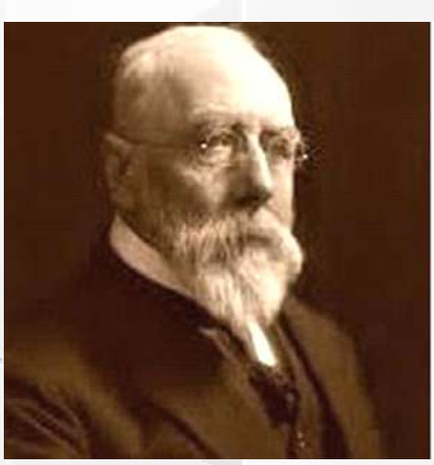
होगा, इसके लिए सबसे पहले, वृक्षारोपण को बढ़ावा देना होगा और वनों की कटाई को भी रोकना होगा। वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिससे वायु शुद्ध रहती है। हमें जल संसाधनों का संरक्षण करके पानी की बर्बादी को रोकना चाहिए। प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करके रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देना चाहिए।

धरती पर रहने वाले सभी व्यक्ति द्वारा उठाए गए छोटे कदमों के माध्यम से हम बहुत ही आसान तरीके से पर्यावरण को सुरक्षित कर सकते हैं। हमें अपशिष्ट की मात्रा में कमी करना चाहिए तथा अपशिष्ट पदार्थ को वही फेकना चाहिए जहां उसका स्थान है। प्लास्टिक बैंग का उपयोग नही करना चाहिए।

सरकारें द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाएं और कानून लागू की गयी हैं जैसे स्वच्छ भारत अभियान, जल बचाओ अभियान, और वन महोत्सव इत्यादि। लेकिन सिर्फ सरकार से ही काम नहीं चलेगा, जन जागरूकता भी जरुरी है जो कि शिक्षा और प्रचार-प्रसार से संभव है।

निष्कर्ष- आज के युग में पर्यावरण प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। बढ़ती जनसंख्या और औद्योगिकीरण के कारण हमारा पर्यावरण दिन-प्रतिदिन प्रदूषित होता जा रहा है। हर जगह- जगह घने जंगल वृक्षों को काटकर बड़ी-बड़ी इमारते तथा प्रोजेक्ट का निर्माण करना पर्यावरण और प्रकृतिके साथ छेड़छाड़ है। इतना ही नहीं जहां वाहनों का धुआं, मशीनों की आवाज, खराब रासायनिक जल आदि की वजह से वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण हो रहा है। जिसके कारण हमें अनेक बिमारियों का सामना करना पड़ रहा है ।

रुचि सिंह
कनि. हिंदी अनुवादक
मुख्यालय



हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है।
- जार्ज ग्रियर्सन

मेरे बेटे

मेरे बेटे कभी इतने ऊँचे मत होना कि कंधे पर सिर रखकर कोई रोना चाहे तो उसे लगानी पड़े सीढ़ियाँ,
न कभी इतने बुद्धिजीवी कि मेहनतकशों के रंग से अलग हो जाए तुम्हारा रंग।

इतने इज्ज़तदार भी न होना कि मुँह के बल गिरो तो आँखें चुराकर उठो,
न इतने तमीज़दार ही कि बड़े लोगों की नाफरमानी न कर सको।

कभी इतने सभ्य भी मत होना कि छत पर प्रेम करते कबूतरों का जोड़ा तुम्हें अश्लील लगने लगे और कंकड़ मारकर उड़ा दो उन्हें बच्चों के सामने से, न इतने सुथरे ही होना कि मेहनत से कमाए गए कॉलर का मैल छुपाते फिरो महफ़िल में।

इतने धार्मिक मत होना कि ईश्वर को बचाने के लिए इंसान पर उठ जाए तुम्हारा हाथ,
न कभी इतने देशभक्त कि किसी घायल को उठाने को झंडा ज़मीन पर न रख सको।

कभी इतने स्थायी मत होना कि कोई लड़खड़ाए तो अनजाने ही फूट पड़े हँसी और न कभी इतने भरे-पूरे कि किसी का प्रेम में बिलखना और भूख से मर जाना लगने लगे गल्प।



स्रोत : रचनाकार: कविता कादम्बरी
अर्जुन एस दवे,
महाप्रबंधक
शाखा कार्यालय वारंगल



"एक डोर मे सबको जो हैं बाँधती वह हिंदी है, हर भाषा को सगी बहन जो मानती वह हिंदी है।"
- गिरिजा कुमार माथुर

कपास का पौधा

एक पौधा बहुत खास है, नाम जिसका कपास है।

इस पौधे से न जाने, कितनों के पेट पलते हैं,
घर, व्यापार, फैक्ट्रियां, मंत्रालय तक चलते हैं।
और भी न जाने इसने कितनों को पाला है,
मजदूर, आढ़ती, कर्मचारी सब को ही संभाला है।

आजकल तो हर तरफ फैशन की भरमार है,
यह भी तो कपास, का ही चमत्कार है।
धागा और कपड़ा बनकर, विदेशों तक जाता है,
कपास देश में बहुत सी, फॉरेन करेंसी लाता है।

संगीन जिंदगियों की ये धागे में कहानी है,
किसान की मेहनत में छिपी, हर एक जवानी है।
उसकी मेहनत के बिना, ये बुनाई अधूरी है,
कपास की फसल लाती, हर दिल में खुशियाँ पूरी है।

होती खेतों में, धूप और बारिश की बातें हैं,
किसान की मेहनत में, छिपी खुशियों की सौगातें हैं।

धन्य कपास का पौधा, और धन्य वो किसान है,
सोई अर्थव्यवस्था में, जो डाल देता जान है।

कतरा कतरा धागे का, उसकी मेहनत की पहचान है,
कपास की महिमा में, 'समीर का भी सम्मान है।

समीर कुमार
अनुभाग अधिकारी (लेखा)
शाखा कार्यालय सिरसा

हिंदी

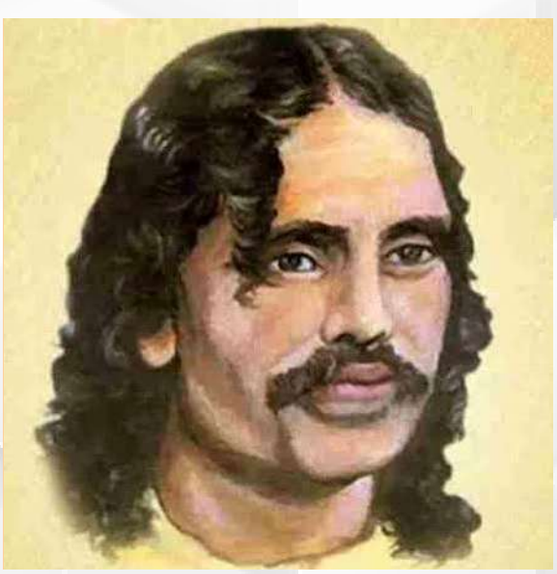
हिंदी नहीं किसी की दासी
हिंदी अपने घर की रानी
हिंदी है भारत की भाषा
हिंदी है गंगा का पानी
हिंदी अपने घर की रानी।

भारत में ही जन्मी हिंदी
भारत में परवान चढी
भारत इसका घर-आँगन है
नहीं किसी से कभी लड़ी
सबको गले लगाकर चलती
करती सबकी अगवानी
हिंदी अपने घर की रानी।

खेतों-खलिहानों की बोली
आँगन-आँगन की रंगोली
सत्य-शिव-सरलतम सुंदर
पूजा की यह चंदन रोली
जनम जनम जन-जन की भाषा
कण-कण की वाणी कल्याणी
हिंदी अपने घर की रानी ।।

भूख नहीं है इसे राज की
प्यास नहीं है इसे ताज की
करती आठों पहर तपस्या
रचना करती नव समाज की
याचक नहीं, नहीं है आश्रित
सदा सनातन अवढर दानी
हिंदी अपने घर की रानी ।

(रत्तीराम मीणा)
सहायक प्रबंधक (विपणन)
उप शाखा कार्यालय भीलवाडा (राजस्थान)



निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

- भारतेंदु हरिश्चंद

सदियों में है सुशोभित जो

सदियों में है सुशोभित जो
चार देशो की श्रेणी में,

पुनः हुआ मेरा देश शुमार।
चांद पर कदम रखने वाले देश चार,

दक्षिण ध्रुव पर हमारा कदम सर्व प्रथम बार।
कहते है दुनियां की महासत्ताएं चार,

इन महाशक्तियों में मेरा भारत भी हुआ शुमार।
सदिंयों से विराजमान है बनकर चंद्रमौलेश्वर,

सनातन धरा की प्रत्येक वस्तु में बसे शंकर।
बार-बार उतरे पर हम चांद पर,

कर रहे उतरने तैयारी है अब सूरज पर।
धन्य है विज्ञान, धन्य है मेरे देश के वैज्ञानिक,

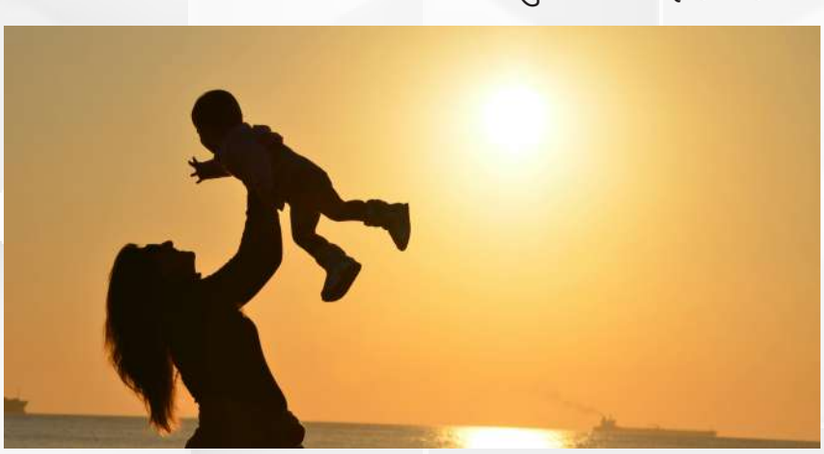
धन्य है माँ भारती की पवित्र धरा
जिसने हमें सदिंयों से संजोया संवारा।

अमृत काल की यही घड़ी,
निसंदेह बनेगी की देश के लिए बड़ी।

मनीष कुमार अग्रवाल
अनुभाग अधिकारी
शाखा कार्यालय अहमदाबाद

माँ

माँ संवेदना है, भावना है,
अहसास है माँ जीवन के फूलों में, खुशबू का वास है
माँ रोते हुऐ बच्चे का खुशनुमा पलना है
माँ मरुस्थल में नदी या मीठा सा झरना है
माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है
माँ पूजा की थाली है, मंत्रों का जाप है
माँ आंखों का सिसकता हुआ किनारा है
माँ गालों पर पप्पी है, ममता की धारा है
माँ झुलझते दिनों में कोयल की बोली है
माँ मेहंदी है, कुमकुम है, सिंदूर है, रोली है
माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है
माँ फूंक से ठंडा किया कलेवा है
माँ कलम है, दवात हैं, स्याही है
माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है
माँ अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है
माँ काशी, काबा है, और चारों धाम है
माँ चिंता है, याद है, हिचकी है
माँ बच्चे की चोट पर सिसकी हैं
माँ चूल्हा, धुआं, रोटी और हाथों का छाला है
माँ जीवन की कड़वाहट में अमृत का प्याला है
माँ पृथ्वी है, जगत है, धूरी है
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है
माँ का महत्व दुनिया में कम हो नहीं सकता
माँ जैसा दुनिया में कोई हो नहीं सकता



अरुण कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (विपणन)
भारतीय कपास निगम लिमिटेड
भटिंडा

गलती का एहसास

अपनी पत्नी की मृत्यू के बाद शुक्लाजी अकेले पड़ गये थे पूरा दिन शुक्लाजी घर पर ही रहते थे। अब तो उनके बेटे की बहू की आँखों में शुक्लाजी चुभने लगे थे शुक्लाजी अपनी पत्नी के शोक में डूबे रहते थे। उनके बेटे की बहू को वे बोझ लगने लगे थे। बेटे के घर से जाने बाद बहू ने उनका ध्यान रखना बंद कर दिया था।

अब तो बेटे की बहू द्वारा, सुबह का बासी खाना शाम को और शाम का बचा हुआ खाना सुबह में शुक्लाजी को परोसा जाने लगा।

एक दिन शुक्लाजी का बेटा उनके पास बैठा था शाम का समय था शुक्लाजी पहले खाना खा चुके थे क्योंकि शुक्लाजी को जल्दी खाना खाने की आदत थी बेटे के आने से पहले ही बहू शुक्लाजी को खाना खिला देती थी और शुक्लाजी जल्दी सो जाते थे एक दिन शुक्लाजी जगे हुये थे। पिता के पास बैठ कर बेटा उन से बातें करने लगा तथा उनके बेटे ने भी वही अपना खाना लगाने के लिए अपनी पत्नी को कहा।

शुक्लाजी ने जब बेटे की थाली में दाल और करेले की सब्जी देखी तो उनके मुँह में पानी आ गया क्योंकि करेले उनकी पसंदीदा सब्जी में से एक थी उनसे सब्जी देख कर रहा नहीं गया वे एकदम चौक कर बोले दाल व करेले बनाये है बेटे ने कहा हाँ पापा आप ने नहीं खाये शुक्लाजी बोले नहीं मैंने तो आलु की सब्जी से रोटी खाई है उनका बेटा समझ गया कि मेरे पिताजी को बासी खाना दिया जा रहा हैं। बेटे ने उस वक्त शोर मचाना सही नही समझा उसे लगा कि यदि इस समय मैं पत्नी अपनी को कुछ कहूँगा तो यह मेरे पिता के लिए सही नहीं होगा इससे मेरी पत्नी के मन में मेरे पिता के लिए नफरत और अधिक बढ़ जायेगी। बेटे ने कहा अच्छा और उसके आगे बेटे ने एक शब्द नहीं कहा न ही अपनी पत्नी को और न ही अपने पापा को।

रोज शुक्लाजी का बेटा दुकान से आठ बजे तक घर आता था लेकिन आज वह जल्दी घर आ गया जिस वक्त उसके पापा खाना खाते थे। बहू ने ससुर के लिए थाली परोसी बेटा पास में बैठा था जैसे ही बहू ने अपने ससुर के आगे खाने की थाली की, थाली खुद बेटे ने पकड़ ली और बोला ये खाना मैं खाता हूँ, तुम पापाजी के लिए दूसरी थाली में खाना लगा दो, यह सुनकर बहू एक दम से सुन्न पड़ गयी क्योंकि वह सुबह का बासी खाना था जो वह अपने ससुर के लिए लाई थी जो उसके पति के हाथ में था तो वह काँपने लगी बेटा थाली को देखते ही समझ गया कि यह बासी खाना हैं।

फिर शुक्लाजी के बेटे ने अपनी पत्नी को समझाया कि यदि मेरे पिता की जगह तुम्हारे पिता होते और तुम्हारी भाभी ऐसा करती तो तुम्हें कैसा महसुस होता या फिर भगवान न करे कभी आगे चलकर हम में से एक ना रहे और हमारें बच्चें हमारे साथ ऐसा करेंगे तो हम पर क्या गुजरेगी और कहा कि आज से पापा और मैं साथ में खाना खाया करेगें।

शुक्लाजी के बेटे की पत्नी को अपनी गलती का अहसास हुआ उसने अपने पति व ससुर से माफी माँगी और कहा वो फिर कभी भी ऐसा नहीं करेगी। उसके बाद वह अपने ससुर को पिता की तरह समझनें लगी ।

प्रीति गर्ग
एमटीएस
शाखा कार्यालय श्रीगंगानगर

क्योंकि.....!

मखौल न बनाना उनकी जो पसीने से तर है,
यकीं मानिये मेहनत की रोटी में गजब का हुनर है...!

नुमाइश मत करना मखमली राहों की,
पैदल चलनेवालों का भी अपना ही सफर हैं...!

गिरो तो जब कोई हाथ बढ़ा दे,
वह गिरना भी ऊँचा शिखर है....!

देख लेना सभी आशियाने में अपना घर,
नुख्स -ए-नज़रिये से तो शहर भी खंडहर है ....!

हो सके तो छोटा हो जाना कभी कभी
बड़ा तो ये खारा समुंदर है...!

मल ढूँढो खुदा को आसमान में
उसके इनायत की उन्स हमारे अंदर है....!

मुस्कुरा देना आते जाते हर एक के संग,
कौन जाने किसके जीवन में जाने कैसा बवंडर है....!

नाज़ हैं हमें बोलते अल्फाजों पर
वरना खामोशी के नज़्मों का अपना ही असर है.....!

जरुरी नहीं हर कविता को
फूलवारी सा पहचान मिले,
पन्ने अगर कमल सा खिलता मिले;
तो लिखावट बहुत सुंदर है....!

पूजा झा
कनिष्ठ सहायक
शाखा, औरंगाबाद

भारत में जल संकट एवं जल संकट के समाधान

भारत में जल उपलब्धता व उपयोग के कुछ तथ्यों पर विचार करें तो भारत में वैश्विक ताजे जल स्रोत का मात्र 4 प्रतिशत मौजूद है जिससे वैश्विक जनसंख्या के 18 प्रतिशत (भारतीय आबादी) हिस्से को जल उपलब्ध कराना होता है।

भारत में तकरीबन 70 प्रतिशत जल प्रदूषित है, जिसकी वजह से वैश्विक जल गुणवत्ता सूचकांक 2024 में, भारत 122 देशों में 120 वें स्थान पर था।

केंद्रीय जल आयोग द्वारा अंतरिक्ष इनपुट का उपयोग करके भारत में जल उपलब्धता का पुनर्मूल्यांकन 2019 अध्ययन के आधार वर्ष 2021 और 2031 के लिए औसत वार्षिक प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता क्रमशः 1486 घन मीटर और 1367 घन मीटर आंकी गई है। 1700 घन मीटर से कम वार्षिक प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता को जल संकट की स्थिति माना जाता है।

देश में पानी की खपत- देश में जल की कुल खपत का तकरीबन 85 प्रतिशत हिस्सा कृषि क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है। जबकि केवल 10 प्रतिशत उद्योगों में और केवल 5 प्रतिशत पानी घरों में प्रयोग होता है।

जल संकट के समाधान-

नदियों को परस्पर जोड़ना- सिंधु-गंगा की नदियाँ बारहमासी हैं क्योंकि वे वर्षा के साथ-साथ हिमालय के ग्लेशियरों से भी पोषित होती हैं। भारत में प्रायद्वीपीय नदियाँ मौसमी नहीं है, क्योंकि वे मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिमी मानसून से वर्षों पर निर्भर हैं। राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना में नदियों को भंडारण बांधों के नेटवर्क से जोड़कर जल-अतिरिक्त बेसिन से जल-कमी वाले बेसिन में जल स्थानांतरित करने की परिकल्पना की गई है।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना- सरकार इस योजना में पानी के सोर्स जैसे कि पानी का संरक्षण और लेंड डेवलपमेंट जैसे कम करवाती है। इस योजना के तहत किसान सिंचाई के उपकरण खरीदते हैं तो इस खर्च पर उन्हें सब्सिडी दी जाती है। ये योजना समय और पैसे दोनों की बचत करती है। सरकार की इस योजना के जरिए ड्रिप सिंचाई, स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी तकनीक को बढ़ावा दिया जाता है।

कम पानी खपत फसलें उगाने को बढ़ावा- संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट क्रॉप वर्ष घोषित किया है। मोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कंगनी, चीना, कोदो, कुटकी और कुट्टू को मिलेट क्रॉप कहा जाता है। मिलेट्स को सुपर फूड कहा जाता है, क्योंकि इनमें पोषक तत्व अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में होते हैं। इन फसलों को कम पानी की अवश्यकता होती है जिससे हमारी धान पर निर्भरता कम हो जयेगी 1 किलोग्राम धान को उगाने के लिये 5000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है।

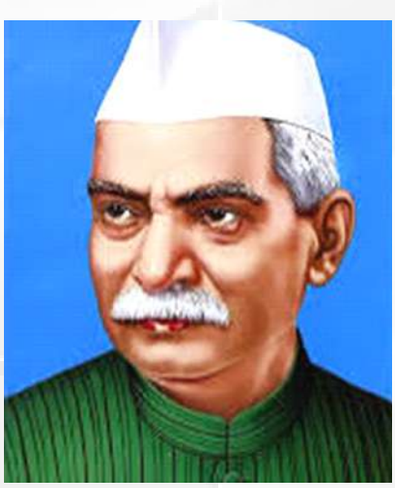
रेन वाटर हार्वेस्टिंग- वर्षा जल को एकत्र करने की प्रक्रिया को रेन वाटर हार्वेस्टिंग कहते है। रेन वाटर निम्नलिखित कार्यों के लिये इसका उपयोग सर्वथा उपयुक्त है: 1. बर्तनों की साफ-सफाई में, 2. नहाना व कपड़ा धोने में, 3. सिंचाई के लिये, 4. मवेशियों के पीने, नहाने आदि के लिये।

अंकित कुर्मी
कनिष्ठ सहायक
उप शाखा कार्यालय राजकोट (गुजरात)

सेवानिवृत्ति

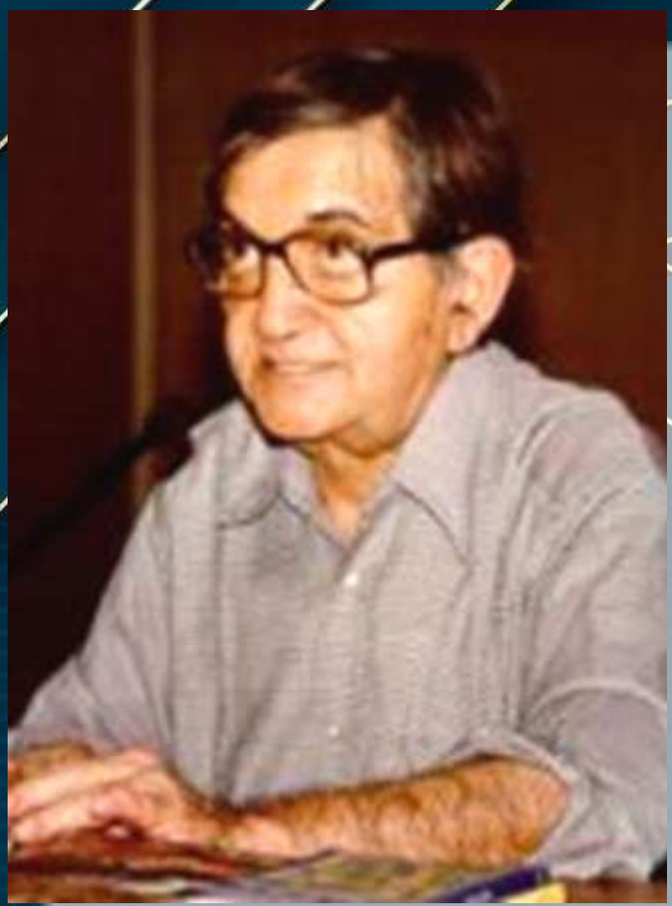
अप्रैल से सितंबर 2024 के दौरान निम्नलिखित अधिकारी एवं कर्मचारी निगम से सेवानिवृत्ति हुए, सीसीआई परिवार की ओर से उनके सुखद भावी जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

क्रम	नाम, पदनाम, स्थान	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	श्री एकनाथ इंगले, सहायक महाप्रबंधक, मुख्यालय	30.04.2024
2.	श्रीमती ललिता सेंगर, निजी सचिव, इंदौर	30.04.2024
3.	श्रीमती सती श्रीधरन, वरि.पीपीएस, मुख्यालय	31.05.2024
4.	श्रीमती श्रेष्ठा देवी राना, एमटीएस, नई दिल्ली	31.05.2024
5.	श्री डी डी सोलंकी, वरिष्ठ वाणिज्यिक अधिकारी, अहमदाबाद	31.05.2024
6.	श्री नरेश कुमार शर्मा, एमटीएस, श्रीगंगानगर	30.06.2024
7.	श्री अभय आदरकर, एमटीएस, मुख्यालय	30.06.2024
8.	श्रीमती शिष्टा वेंकटा शुभलक्ष्मी, सहायक प्रबंधक, आदिलाबाद	31.07.2024
9.	श्री लड्डूलाल खटिक, वरिष्ठ वाणिज्यिक अधिकारी, रायगढ़ा	31.07.2024
10.	श्री जे नागेश्वर राव, सहायक महाप्रबंधक, गुंटूर	31.07.2024
11.	श्री तुषार जानी, स्टेनो ग्रेड 1, अहमदाबाद	31.07.2024
12.	श्री रविन्द्र डी कदम, एमटीएस, मुख्यालय	31.08.2024



हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य को सर्वांगसुंदर बनाना हमारा कर्तव्य है

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद



निर्मल वर्मा

जन्म : 23 अप्रैल, 1929

निधन : 25 अक्टूबर, 2005

रचनाएं: वे दिन, लाल टीन की छत.रात का रिपोर्टर (उपन्यास), परिन्दे, जलती झाड़ी, (कहानी), चीड़ों पर चाँदनी, हर बारिश में, धुंध से उठती धुन ।

सम्मान और पुरस्कार : सन 1999 में साहित्य हेतु देश का सर्वोच्च सम्मान **ज्ञानपीठ पुरस्कार** दिया गया। सन 2002 में भारत सरकार की ओर से साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए **पद्म भूषण** से सम्मानित किया गया । इसके अतिरिक्त 1995 मे **मूर्तिदेवी पुरस्कार**, सन 1984 में **साहित्य अकादमी पुरस्कार** एवं **उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार** से सम्मानित किया जा चुका है ।

भा.क.नि.
CCI

भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
कपास भवन, प्लॉट नं. 3 A सेक्टर 10,
सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुम्बई - 400 614, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : 022-27579217 फैक्स : 022-27576030

सत्यमेव जयते

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली - 110 011
www.ministryoftextiles.gov.in

"राजभाषा रश्मि" छमाही पत्रिका का प्रकाशन ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड, नवी मुंबई - 400 614